Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

VOL- VII | ISSUE- I | JANUARY | 2020 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 6.293 | ISSN 2349-638x

सिन्धु संस्कृति के शिव

डॉ. विवेकानंद लक्ष्मण चव्हाण
शोधकर्ता
इतिहास विभाग
एस.पी.डी.एम.महाविद्यालय, शिरपूर
जि.धुळे (महाराष्ट्र) ४२५४०५

प्रस्तावना :-

सिन्धु हमारे देश की एक नदी है | जो हिमालय पर्वतसे निकलती है और पंजाब तथा सिन्ध प्रान्त में बहती हुई अरब सागर से मिलती है | सिन्धु संस्कृती घाटी का तात्पर्य सिन्धु नदी के दोनों किरानो पर स्थित उस प्रदेश से है जो उसके जल से सींचा जाता है | किसी देश की सभ्यता का यह तात्पर्य होता है की वहाँ के लोको का सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक संस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन किस प्रकार का है | अतंएव सिन्धु घाटी की सभ्यता का यह तात्पर्य हुआ कि सिन्धु नदी के, दोनो किनारो पर स्थित प्रदेश के लोगो का सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन किस प्रकार का था | कुछ विद्वानों ने इसे हडप्पा तथा मोहोंजोदडो की सभ्यता के नाव से पुकारा है |[१]

भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक सर जॉन मार्शल की सन १९२४ ई की इस घोषणा से विद्वत जगत में हलचल मची कि सिन्धु - घाटी में एक नई सभ्यता खोजली गई है| तथ्य कि सर जॉन मार्शल ने सिन्धु - सभ्यता के बारे में तीन महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे | सर जॉन मार्शल और उनके साथियों ने मोहोंजोदडो में खुदाई का काम १९२१ से १९२७ तक किया | बाद मे जे.एच.मे के ने १९२७ से १९३१ तक खुदाई की | जी.एफ.डेल्स ने भी १९६३ मे इस स्थान पर कुछ काम किया |मोहोंजोदडो (मृतको का टीका८ सिन्ध में लारकाना जिल्हे के एक मैदान में एक उँचे टील्ले का स्थानीय नाम है | यह विश्वास किया जाता है कि लगभग ५००० वर्ष पहले यहाँ एक नगर था जो कम – से – कम सात बार उजडा और सात बार पुन: बसा | डॉ मार्टिमर व्हीलर का विश्वास है कि इससे भी आधिक सभ्यतओं के प्रमाण इनके नीचे हो सकते है|[२]सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त ताम्र - लेखो, पत्थर की छोटी मूर्तियो, मोहरो और मिटटी की मूर्तियो के अध्ययन से सिन्धु घाटी के लोगो के धर्म का कुछ अनुमान लगा ा जा सकता है| कालोबंगाँ से मिली अग्निवेदियो को छोटकर, किसी भी हडप्पाकालीन स्थल से कोई भी मंदिर या पुजास्थल अथवा पूजा के लिए प्रयुक्त होनेवाले पदार्थ नही मिले है | इस संबंध में हमारे पास जो भी आंशिक जानकारी उपलब्ध है, उसके आधार पर हम कह सकते है कि विकसित सिन्धु सभ्यता कालीन धार्मिक विश्वाओं में परवर्ती हिन्दु धर्म की अनेक विशेषताएँ जैसे - मातृ - देवी, पशुपति शिव, पवित्र पशुओं, वृक्षों आदि की पुजा शामिल थी |[३]सिन्धु सभ्यता के कई नगरो से प्राप्त कई मुहरों से पशुपति शिव का साक्ष्य उभरकर सामने आता है | इस स्थल से प्राप्त दो मुद्राओं पर देवता जैसी कोई आकृति है | पुरुष देवताओं मे श्रृंगयुक्त शिरोवस्त्र से सुशोभित सिंहासन पर पद्मासन मुद्रा में बैठे और हाथी, व्याघ्र, भैस और गेंडे से घिरे हुए, एक, त्रिमुखी देवता सर्वाधिक उल्लेखनीय है | सिंहासन के नीचे एक हिरण नजर आता है | उन्हे अनेक चुडियाँ और गले के वक्षस्त्राण धारण किए हुए दिखाया गया है |[४] उनकी आकृति के उपरी भाग पर सात अक्षरो का एक अभिलेख भी अभिलिखित है | इस आकृति को कम से कम शिव के तीन रुपो के साथ संबध्द किया गया है | वे है १) त्रिमुख शिव रुप २) पशुपति ३) योगीश्वर, प्रथम दो रुप तो उक्त मुहर पर बनी आकृतियो से ही बहुल स्पष्ट है | पूवेक्ति देव पद्मासन मुद्रा में बैठे हुऐ है और उनके नेत्र नासिका के अग्रंभाग की और केंद्रीयभूत है जिसमें अनके योगीश्वर रुप की भी पुष्टि होती है | अन्य उत्खननों से शिव की उत्कीर्णित आकृतिवाली दो अन्य मुहरे भी प्राप्त हुई है | इन मुहरों पर उत्कीणित देवता की आकृति को कटिबंध के अतिरिक्त संपूर्ण शरीर को नग्नावस्था और शिरोवस्त्र धारण किए हुए दिखाया गया है | मार्शल ने उन्हे स्पष्टत: आद्य शिव बताया है, जो अपने सर्वाधिक शक्तिशाली रुप में प्रचननशक्ति के देवता है और पशुपति अथवा जंगली जावनरों एवं पशुओं के स्वामी के रुप में प्रसिध्द है | लेकिन एच,पी सुल्लीवन ने मार्शल की इस व्याख्या को चुनौती दी है | उत्खनन के दौरान सर जॉन मार्शल को कुछ शंक्वाकार और बेलनाकार पत्थर मिले, जिनके आधार पर उन्होने यह अनुमान लगाया कि वहाँ लिंग पुजा की जाती थी | इन लिंगो को परवर्ती हिन्दु धर्म मे पुजित शिव -लिंग का आद्य - रुप माना गया है | इसी प्रकार कुछ लघु चक्राकार पत्थरो की खोज के आधार पर मार्शल ने यह प्रस्तावित किया कि वे स्त्री जननांग (योनी) के प्रतीक है और इसी मान्यता के आधार पर मातृ - देवी की पूजा की जाती थी |[५]

धर्म की संकल्पना किंचीत अपवादों को छोडकर प्राय: सार्वभौम रही है | भय, आश्चर्य, स्वप्त एवं जीवात्मवाद, धार्मिक विश्वासों के मूल उत्स माने गये है | मानवके बौध्दिक विकास के साथ ही उसकी धार्मिक मान्यताओं में परिष्कार एवं परिवर्तन हुए | किन्तु धर्म के क्षेत्र में परम्परा के अतिशय प्रभाव के कारण, सभ्यजनों के धार्मिक विश्वासों मे भी आदिम तत्व अविकल रुप सें विद्यमान दिखाई देते है | सिन्धु सभ्यता भी इसमा अपवाद नही थी | सिन्धु घाटी में बहुत से विशाल, खेंडो थे जिन पर शताब्दियों से आंधी पानी और प्रकृति के परिवर्तनो ने मोटी मिट्टी की तह जमा दी थी | समृध्द जनों एवं श्रमजीवीयों के धार्मिक विश्वाओं में भिन्नता की संभावना की और कपितय इतिहासकारों ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया है |[६] सिन्धु सभ्यता के पोषक किस जाति या नस्ल के थे, इसका कोई स्पष्ट प्रमाण नही मिलती है, तथापि उत्खनन में प्राप्त आस्थि, पंजरो को देखकर उस सभ्यता के अनुयायियों की जाती के अनुमान का अवश्य प्रयत्न किया गया है | कर्नल और डॉ.गुहा ने अनुमान किया है, कि यहाँ चार जातियों के लोक रहते रहे होगें - १) भूमध्यसागरीय २) मंगोलियन ३) अल्पाइन ४) प्रोटो आस्ट्रेलायह | सिन्धु सभ्यता के अधिकांश निवासी भूमध्यसागरीय थे |पुरातात्विक

सामग्री के आधार पर कहा जा सकता है कि शिव की पूजा की शूरुवात सिन्धू सभ्यता काल से ही पायी जाती है |

नन्दी परिकल्पना :-सिन्धु सभ्यता में मातृदेवी तथा पितृदेव प्रधान देवी देवता के रुप प्रतिष्ठित है तथा दोनो का परस्पर सह - सम्मानित स्थान प्रतीत होता है, जब की पशु, रुप में प्रदर्शन के सम्बन्ध में हमे आधिसंख्य वृषभ (बैल) की लघु मूर्तियाँ प्राप्त हुई है फिर भी गाय की अनुपस्थिती (अभाव) से एक विस्मयकारी तथ्य उभर करसामने आता है | सिन्धु सभ्यता के अनेक नगरमें अत्याधिक मात्रा में कुबळ युक्त बैल की लघु पक्व बैल की लघु पक्व मृ.मुर्तिया जो बजीरिस्तान तथा उत्तरी बलुचिस्तान से प्राप्त हुयी है, वे सभी भारतके ब्राहमणी वृषभ में पुर्न प्रकटीकरण है | सिन्धुघाटी की मुद्राओं पर प्राप्त मानव पशु की संयुक्त आकृतियाँ जो संभवत: शिव के मानव पशु की आकृति से चलकर उनके मानवाकृति देवत्व के विकास की संयोजनशील अवख्याओं अथवा दोनों की घनिष्ट पहचान का प्रदर्शन करती है |एक मुद्रा पर एक काल्पनिक श्रृंगधारी बाघ पर आक्रमण करते हुए एक सींग तथा पूंछ युक्त प्राणी जो अंर्ध्दमानव तथा अर्ध्दवृषभ है प्रदर्शित किया गया है |[७] इसके अतिरिक्त वृषभ का सींगो से युक्त, व्याघ्र का अनेक मुद्राओ पर प्रकटीकरण एक प्रकार से श्रृंगधारी शिव से सम्बन्धित है | वृषभ को शिव का वाहन समझा जाता था | शिव का प्रिय वाहन वृष या वृषभ है जिसे सामान्यतया उनके पार्श्व मे खडा या उस पर आरुढ शिव प्रदर्शित किये जाते है | हडप्पा कि मुद्राओं मे हमे एक कुबड रहित बैल की ऐसी खडी हुई आकृति प्राप्त होती है उस मानवाकृति के बांयेहाथ में एक लम्बा दण्ड (गदा) है|मोहोंनजोदाडो की एक मुहर पर एक बैल की आकृती है, जिसकी रक्षा एक सर्प कर रहा है और यह बैल एक शत्रु से लढ रहा है, जिसकी आकृति मनुष्यों की स्त्री है | इस प्रकार शिव के वाहन नन्दी को पशुमुखधारी मानव तथा शिव के प्रतिरुप दोनों प्रकार से प्रस्तृत किया गया |

मातृपूजा :-

आदिम महाशक्ति के रुप मे जगद विद्यायिनी महाकाल की उपासना - पुजा - प्रतिष्ठा एवं स्तवन - अर्चन मानव जाति अभ्युदय काल से ही जुडा हुआ मिलता है | सिन्धु देवगणो में मातृदेवी का स्थान सर्वश्रेष्ठ था | हडप्पा, मोहोंजोदडो, दन्हुदडो आदि स्थलों से अनेक मुहरों पर नारी मूर्मियाँ तथा बहुतायत से नारी मृण्मूर्तियाँ भी मिली है जिन्हे मातृदेवी का ही प्रतिरुप माना गया है |[८] हडप्पा से प्राप्त एक अभिलेख युक्त मुद्रा पर एक नग्न नारी का संकन है जो उपर पैर किये हुए सिर के बल चित्रित है एवं उसके दोनों पैर फैले हुए है | उसके गर्भ से एक पौधा प्रस्फुटित होता दिखाया गया है | मुद्रा पृष्ठ भाग पर हाथ में हंसिया के आकार का एक चाक लिए हुए पुरुष भी है तथा एक नारी भूमि पर नतमस्तक करबध्द बैठी हुयी है | अन्य एक मुद्रा मे पीपल वृक्ष की दो शाखाओं के मध्य खडी स्त्री आकृती भी संभवत: मातृदेवी का ही प्रतिनिधित्व करती है | इस मुहर पर नीचे की और एक व्यक्ती बकरा लाते हुए दिखता है | एक पंक्ती मे छ: व्यक्ति खडे है, नीचे झुकी हुयी आकृति के हाथ में चौडा फलवाला हाथियार है | सौन्धव कालीन मातृदेवी मानव - लोक की पोषिका पालिका जननी मानी जाती थी |[९]मोहोंजोदडो में मातृदेवी के कुछ चित्र पशुओं के साथ भी मिले है जो मातृदेवी को पशु पक्षी की आधीश्वरी के स्परुप को अभिव्यक्त करते है | सैंधव स्थलो से अधिक मात्रा मे प्राप्त लिंग योनी आकृतियो के आधार पर मार्शल महोदय ने आद्यशिव का मातृदेवी से सम्बन्ध स्वीकार किया है अत: जब रुद्र ने सिन्धुघाटी पुरुष देवता को आत्मसात किया तब यह स्वाभाविक ही था कि सिन्धु घाटी की देवी का आम्बिका के साथ समीकरण, हो जाय | डॉ.एच.एल. बाशम का भी मानना है की देवी माता का प्रधान रुप वैदिक रुद्र की पत्नी का था | शक्ति का प्रारम्भिक रुप शिव की पत्नी उमा या पार्वती है जो जगज्जननी कही जाती है | काली ङ्ग चामुण्डा, देवी शिवानी, रुद्राणी, भवानी आदि विभिन्न नाम उनके शैव सम्बन्ध को प्रकट करते है | हडप्पा सभ्यता के अन्तर्गत लिंग और योनि जैसे प्रजनन प्रतीको के उपासना के संकेत मिलते है | सैंधव सभ्यता से प्राप्त कुछ मुद्राओं पर मानव मुखाकृति से युक्त पशु अंकन है | मोहोंजोदडो से प्राप्त मुद्राओं पर वृषभ शिव से घनिष्ट रुप से सम्बान्धित हो गया |[१०]इस एकीकरा के परिणामस्वरुप रुद्र के साथ सहचारी, देवी की उपासना का भी आरम्भ हुआ और इन दोनों को पुरुष और प्रकृति मानकर सृष्टी प्रक्रिया की कल्पना से शैवोपासना की दर्शनिक पीठीका भी निर्मित हो गयी | इन तथ्यों से यह स्पष्ट होता है की सृष्टी की आदि शक्ति सैन्धव काल में मातृदेवी के रुप में पुजिन थी तथा शक्ति की उपासना मातृदेवी के रुप मे अनादि काल से प्रचालित थी जिसमें उसे मानवीस जगत के साथ ङ्ग साथ वानस्पतिक एवं पाश्विक जगत की सृष्टिकारणी एवं अधीश्वरी देवी के रुप में स्वीकार किया गया था | परम - नारी - पुरुष की युग्म करे उपासना के साथ ङ्ग साथ सैंधव वासियों ने लिंग और योनि की प्रतीकात्मक उपासना ईश्वर की सृजनात्मक शक्ति की उपासना है | यद्यपि शक्ति या शाक्त शब्द बाद में प्रचलित हआ किन्तु देवी या स्त्री रुप में देवशक्ति किवा मातृदेवी की मान्यता जडे अति प्राचीन काल तक चली जाती है | इस प्रकार शिव और शक्ति एक दुसरे से अभिन्न तथा सृष्टि के आदि कारण है | जैसे पुष्प में गन्ध, चन्द्र में चन्द्रिका सुर्य मे प्रभा नित्य और स्वभाव - सिध्द है, उसी प्रकार शिव में शक्ति भी स्वभाव सिध्द है | शिव में इकार ही शक्ति है | शिव कटस्थ तत्व है और शक्ति परिणामी तत्व | शिव अजन्मा आत्मा है और शक्ती जगत में नाम रुप के द्वारा व्यक्त सत्ता यही अर्धनारीश्वर शिव का रसस्य है |[११]

उपसंहार :-

भारतीय संस्कृती के इतिहास में हिन्दू - देवताओं की परिकल्पना का महत्त्वपूर्ण स्थान है | यह परिकल्पना भारतीय मानस के विकास से पूरी तरह जुडी हुई है | प्रकृति के सहस्यात्मक महत्व को समझने के लिए मानव ने विभिन्न युगो में किन्ही अति मानवीय दैवी शक्तिओं की समय - समय पर परिकल्पना की है | शैव धर्मावलम्वियों के प्रधान इष्टदेव भगवान शिव है | सिन्धु सभ्यता के प्रकाश में आ जाने के बाद मोहोंजोदडो एवं हडप्पा जैसे प्रमुख स्ललों के उत्खनन से भारतीय धार्मिक इतिहास पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पडा है |इस सिन्धु तटवर्तिनी सभ्यता में शिव पूजा की विशेषता टिखलाई पडती है | यहाँ पर दो तरह की शिव - मूर्तियाँ मिली है | पहली मूर्ती जो मोहोंनजोदाडो की मुहरों में मिलती है योगावस्था में बैठे ध्यानी शिव की है | इस मूर्ती में शिव बीज में बैठे है तथा उनके चारो और पशु की आकृतियाँ है | बाध गेंडा तथा भैस आदि पशुओं से घिरे होने के कारण उन्हे पशुपति की संज्ञा दी गयी | त्रिशुल की जगह आदि शिव के मस्तक पर तीन आकृतियाँ है जो आगे चलकर अलग त्रिशुल का आकार धारण कर लेली है | मुहर में शिव के सिहासन के नीचे दो मृग भी है दुसरी मुहर में शिव के तीन मुखहै जो ब्रह्मा, विष्णू, तथा महेशका बोध कराते है | ध्यानी

शिव की आकृती के आतिरिक्त बहुत सी पत्थर आदि की सामग्रियाँ मिली है जो शिव लिंग की मूर्ती के समान है जिसमें प्रमाणित होता है कि हइस काल में भी शिवलिंग की पूजा की जाती थी |

संदर्भ सूची :-

१) डॉ.श्रीनेत्र पाण्डेय - प्राचीन भारत का इतिहास लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, १९९४, पृ.१३६
२) डॉ.वी.डी. महाजन - प्राचीन भारत का इतिहास एस.चन्द एण्ड कम्वनी लि.,नई दिल्ली.,१९८९ पृ.४६
३) उपरोक्त , ५६
४) डॉ.वी.के.अग्निहोत्री - भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, ऍलाइड पब्लिशर्स लि., नई दिल्ली,१९९६ पृ. अ- ७४
५) उपरोक्त पृ.७५
६) डॉ.शिवस्वरुप सहाय - प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन
७) सर जॉन मार्शल - मोहनजोदडो एण्ड दी इण्डस, सिविलाइजेशन,वा ३ प्लेट CXIK
८) हरिश्चन्द यादव - प्राचीन भारतीय साहित्य में शिव, अप्रकाशित Ph.D.शोधप्रंबध, वीर बहादुर सिंह पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, २००६ पृ.२०
९) उपरोक्त पृ.२१
१०) उपरोक्त पृ.३७
११) उपरोक्त पृ.३८

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com